मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५४ • फरवरी-२०२०

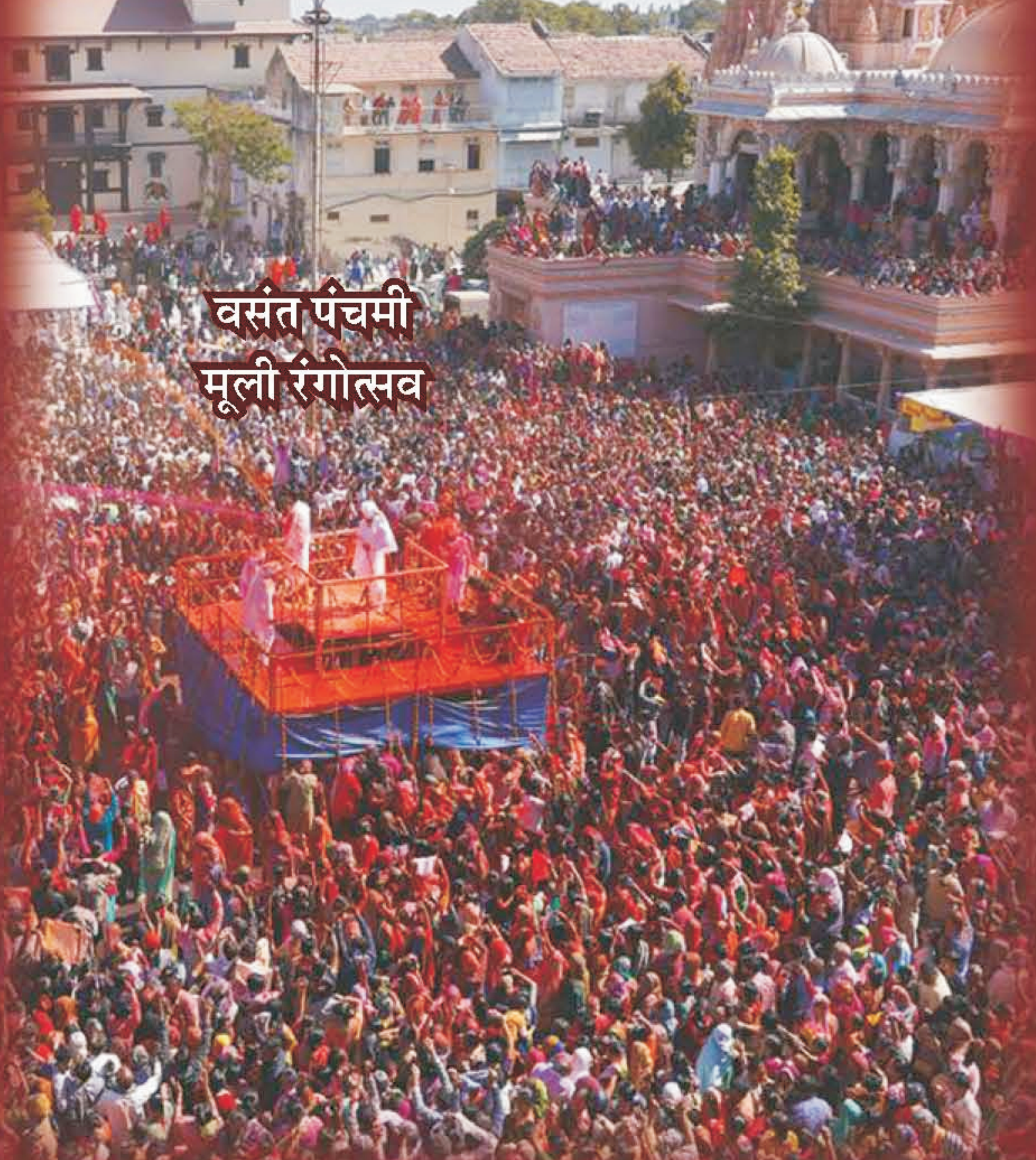

वसंत पंचमी मूली रंगोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) मारुसणा मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (२) वसंत पंचमी को मूली मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) माणेकपुर (चौधरी) मंदिर में शाकोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (४) मोटी आदरज मंदिर में शाकोत्सव करते प.पू. आचार्य महाराजश्री (५) भायला गाँव में कथा पारायण अवसर पर प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १३ ● अंक : १५४

फरवरी-२०२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	पंचदेव	०६
०४.	श्री हुमानजीनी प्रार्थना	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२०

अस्मदीयम्

पहले के समय में भगवान को प्राप्त करने के लिये अनेक ऋषि मुनि कठोर तपस्या करते थे । कोई जल में वर्षो तक खडे रहते थे । कोई सिर उल्टा करके तपस्या करता था । हजारो वर्ष तपस्या के बाद भी भगवान नही मिलते थे ।

इस कलियुग में हम लोगो को भगवान अत्यंत सरल रुप में मिले है । भगवान का स्मरण करने के लिये सबसे उत्तम साधन सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण महामंत्र प्राप्त है । ११२ छोटे श्लोक में उपस्थित शिक्षापत्री आश्रितो के लिये मोक्ष एवम् कल्याण हेतु अमोधशास्त्र है । उसके अनुसार कोई भी मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करे । ईहलोक एवम् परलोक में कोई कष्ट नही होगा । इस संसार के जीवो को देखे तथा अपने सम्प्रदाय के आश्रित को देखे । दोनो की तुलना करें । तो हरि के आश्रित सुखी सम्पन्न है । उन्हे आधिव्याधिएवम् उपाधी का प्रभाव नही पडता है । जब की संसार के अन्य जीव कष्टो से भरे है ।

इस लिये हम लोगो को आठो प्रहर श्रीहरि का अखंड भजन, कीर्तन का व्यसन करना चाहिए । जिससे भगवान इस लोक की अपनी सभी कष्टो को भगवान हर ले ।

वचनामृत २७३ महामहोत्सव ता. २४ फरवरी से २६ फरवरी २०२० तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद और प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में भव्यता पूर्वक मनाया जायेगा है । पूरे सत्संग का अलौकिक लाभ उठाने के लिये हमारा नम्र निवेदन है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा (जनवरी-२०२०)

३-४	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपर (कच्छ) में पधरामणी (आगमन)।
५	श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका कथा और यात्रिक भवन उद्घाटन हेतु पधरामणी।
७	ईन्द्रपुरा गाँव में कथा के अवसर पर पधरामणी।
८	चाँदखेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण अवसर पर आगमन।
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर धमीज पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
१०	भायला गाँव में कथा के अवसर पर आगमन वहाँ से जमीयतपुरा श्री प्रभु हनुमानजी मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर आगमन।
११-१२	श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) शाकोत्सव पर आगमन।
१३	श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) शाकोत्सव पर आगमन।
१६	मारुसणा गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
१७	करजीसण गाँव में पारायण पर आगमन तथा वहाँ से प.भ. अमृतभाई काशीदास पटेल के यहाँ आगमन।
१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीपुरा मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर आगमन।
२८	श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज (मोटी) पाटोत्सव पर आगमन।
३०	श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली पाटोत्सव रंगोत्सव पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जनवरी-२०२०)

५	श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा आयोजित शाकोत्सव अवसर पर आगमन। श्री नरनारायणनगर - घाटलोडीया।
११	हिरावाडी अहमदाबाद शाकोत्सव अवसर पर आगमन।
१२	श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा आगमन।
१६	भक्तिनगर गाँव पर आगमन।
१८	माणसा गाँव पर आगमन।
१९	सत्संग बाल शिविर आप की अध्यक्षता में पूर्ण हुआ। श्री नरनारायणदेवनगर, पारसनगर, घाटोलडीया।
२६	बापूपूरा गाँव सत्संग सभा पर आगमन।
३०	श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में पाटोत्सव एवम् रंगोत्सव हेतु आगमन।

पंचदेव

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

देव की पूजा की जाती है। यह शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश पाँच तत्वो से बना है। शरीर जड है। आत्मा चैतन्य है। जड-चेतन दोनो तत्व अलग होते हुए भी एक साथ होने के कारण समरुप हो गये है। अर्थात् जड और चेतन अलग-अलग नही दिखाई देते है। वेद-वेदान्त और पुराण के ज्ञान का मूल एक समान ही है। जड-चेतन गाँठ को अलग करना है। जड शरीर को चैतन्य से अलग करने के उपायो में एक विशेष उपाय के रुप में पाँच महाभूत अर्थात् पंचतत्वो के मालिक देव पंच देवो की पूजा करने के विधान है। शिक्षापत्री में ईष्टदेव भगवान श्री सहजानंद स्वामीने श्लोक नं. ८४ में विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती, सूर्य पाँच देवो की पूजा करना आश्रितो को आज्ञा किये है। पाँच तत्वो की जड़ता को चैतन्य करने के लिये पाँच देवो की पूजा आवश्यक है। उपासना और पूजा के अलग-अलग सिद्धान्त है। उपासना मात्र उपास्य स्वरुप की ही और पूजा वेद-पुराण प्रतिपादित देवो की जाती है। घर में पाँच देवो की पूजा करनी चाहिए।

शरीर में जो पृथ्वी तत्व है उसके स्वामी गजानन गणपति देव है। कोई अच्छा कार्य करने के पूर्व सर्व प्रथम गणपति की पूजा की जाती है। विघ्न विनाशक की पूजा किये बगैर अन्य देव साधक की पूजा स्वीकार नही करते है। शरीर में पृथ्वी तत्व विशेष है। शरीर का प्रथम आवरण तत्व पृथ्वी है। इसलिये इसके मालिक देव गणपति महाराज की प्रथम पूजा की जाती है। उनकी पत्नी रिध्धि-सिध्धी उनके पुत्र शुभ-लाभ गणपति की पूजा करने वाले के उपर सदैव कृपा बनी रहती है। साधना का आधार शरीर सर्व प्रथम होना चाहिए। हम जप, तप, होम, हवन, पाठ पुरश्चरण आदि जिन देवो की पूजा की जाती है। वहाँ सर्व प्रथम गणपतिदेव की प्रथम पूजा की जाती है। यह पृथ्वी तत्व को चैतन्य बनाने का प्रयास अर्थात् पृथ्वी तत्व की पूजा। पाँच देवो का स्थान हमारी शरीर है। अंदर के देवो की खुशी के लिये बाहर के देवो की पूजा की जाती है। पाँच ज्ञानन्द्रिय, पाँच कर्म इन्द्रिय और इस इन्द्रियो को गण कहा जाता है। उनके पति को गणपति गजानन कहते है। गणपतिजी एक हाथ में लाडु रखते है। जो पूजा करता है उसे लाडु देते है। वासना और कुसंग बड़े बिघ्न है। गणपति की पूजा से बाधक तत्वो से रक्षा मिलती है।

अग्नि तत्व के मालिक सूर्यनारायणदेव है। सूर्यदेव की पूजा सभी के लिये आवश्यक है। सूर्यदेव स्वास्थ्य

और बुद्धि के दाता है। सर्व देव साक्षात् जगत की प्रत्यक्ष दर्शन देते है। दूसरे देवो के दर्शन के लिये भावना से मूर्ति बनाकर करना पडता है। सूर्यदेव कोई भेदभाव नही रखते है। पूजा करे या न करे सभी को समान पोषिते करते है। वे सभी के जगत मित्रदेव है। पंचाग में जो समय लिखा गया है। उसमें एक मिनट का भी अंतर नही मिलता है। अन्तरिक्ष में स्थित तारा, नक्षत्र, पृथ्वी आदि सूर्य की परिक्रमा कर रहे है। सूर्यदेव की पूजा के लिये सूर्योदय से पूर्व जल द्वारा अर्ध्यदेकर उगते सूर्य के सामने दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना करना चाहिए। जो लोग सूर्योदय के बाद उठते है और दातुन करते है स्नान करते है उससे सूर्यनारायण नाराज होते है। सूर्योदय के पल का स्वागत स्नान ब्रश करके करना चाहिए। हमारे शास्त्र में स्नान के तीन भेद है। ऋषि, मानव, राक्षस, आकाश में तारे दिखाई दे वह स्नान ऋषि स्नान तारे न दिखे सूर्योदय भी नहुंआ हो वह स्नान मानव स्नान सूर्योदय के बाद का स्नान राक्षस स्नान कहा जाता है। उसमें राक्षसी तत्व प्रवेश कर जाते है। राक्षस के पास सींग पूछ नहीं होती है। लेकिन सूर्योदय के बाद दातुन स्नान करने पर उसे राक्षस जैसा कहा जाता है। इस प्रकार श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री श्लोक-४९ में कहते है कि हमारे सत्संगी सूर्योदय से पहले उठा करे। आज कल रोग अधिक होने लगे है। क्योकि सूर्यदेव की वंदना नही करते है। संसार के साक्षात् प्रगट देव है। कम से कम बारह बार सूर्य को प्रणाम करे। सूर्य की पूजा बिना बुद्धि शुद्धि नही होती है। बुद्धि खराब होने पर सारा विश्व खराब दिखाई देता है। शरीर में सूर्य नाडी चल रही है। भारतीय परम्परा में चार सम्प्रदाय दश परंम्परा सभी में सूर्य की वंदना तथा पंचदेव की पूजा का नियम बताया गया है। प्राचीन काल में ऋषि-मुनि सूर्य पूजा सर्व प्रथम किये है। सूर्य पूजा करने वाले का भाविपल प्रबल होता है।

वायु तत्व के मालिक पार्वती देवी-शक्ति प्रकृति है। शक्ति के द्वारा ही भक्ति होती है। माँ अधिक दयालु होती है। प्रकृति के आधार पर संसार-चल रहा है। महाकाली क्रिया शक्ति, महालक्ष्मी द्रव्य शक्ति, महा सरस्वती ज्ञान शक्ति है। शक्ति पवित्रता है। परमात्मा की पूजा करने वाले पर महाशक्ति की विशेष कृपा बनी रहती है। वायु शक्ति के लिये देवी की पूजा करना चाहिए। आकाश तत्व के मालिक विष्णुदेव है। नारायण का आकार आकाश जैसा विशाल है। भगवान की पूजा करने वाले को श्रीहरि संसार का सुख प्रदान करते है। जिसका मन भगवान पर अर्पण है। चतुर्धा मुक्ति के अधिकारी है। मोक्ष नारायण देते है। भोग में वैराग्य के विना मोक्ष का विचार नही आता है। चार तत्व आकाश में होने के कारण नारायण सभी के आधार है।

भगवान शिव जलतत्व के अधिष्ठाता और ज्ञान वैराग्य के दाता है। ज्ञान वैराग्य से भक्ति की दृढता होती है। वैराग्य के कारण सुख-दुःख का प्रभाव मन पर नही पडता है। वैराग्य विना भोगी-योगी त्यागी तपस्वी भी दुःखी है। शिव जल तत्व के मालिक होने के कारण उनके मूर्ति लिंग पर जल चढाने से सभी मनोकामना पूर्ण होती है। मस्तक के उपर गंगाजी है। सूक्ष्म जल तत्व को जटा में रोके है। हमारा शरीर ७२% जल तत्व है। उसके अधिष्ठाता श्री महादेव है। इसलिये उन्हे देवो के देव महादेव कहते है। जलद्वारा अभिषेक महादेव का करने पर स्वास्थ्य अच्छा रहता है। श्री शिव की कृपा होने पर ज्ञान वैराग्य बलवान बनता है।

इस तरह पाँच तत्व पाँच देव के आधीन है। इस लिये अपने सम्प्रदाय में भगवान श्री स्वामिनारायण पंचदेव की पूजा का विशेष आदेश किये है। महाराज का विधान व्यर्थ नही होता है। उसमें गम्भीर अर्थ छिपा रहता है। समझकर पूजा करने से भक्तो को सभी प्रकार की धर्म, ज्ञान, वैराग्य सहित भक्ति की सिद्धि मिलती है।

श्री हनुमानजीनी प्रार्थना

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ हनुमत्सतोत्रम् ॥

नीतिप्रविण निगमागमशास्त्रबुद्धे राजाधिराजरघुनायकमन्त्रिवर्य ।
सिन्दूरचर्चितकलेवर नैष्ठिकेन्द्र श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥१॥
सीतानिमित्तजरघूत्तमभूरिकष्टोप्रोत्सारणैककसहाय हतास्त्रपौध ।
निर्दग्धायातुपतिहाटकराजधाने श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥२॥
दुर्वार्यरावणविसर्जितशक्तिघातकष्ठासुलक्ष्मणसुखाहृतजीववल्ले ।
द्रोणाचलानयननन्दितरामपक्ष श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥३॥
रामागमोक्तितरितारितबन्ध्वयोग दुःखाब्धिमग्रभरतार्पितपारिबर्ह ।
रामांघ्रिपद्ममधुपीभवदन्तरात्मन् श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥४॥
वातात्मकेसरिमहाकपिराट तदीयभार्याञ्जनीपुरुतपः फलपुत्रभाव ।
तार्क्ष्योपमोचितवपुर्बलतीव्रवेग श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥५॥
नानाभिचारिकविसृष्टसीवरकृत्याविद्रावणरुणसमीक्षणदुःप्रधर्ष्य ।
रोगघ्रछसत्सुतदवित्तदमन्त्रजाप श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥६॥
यन्नामधेयपदकश्रुतिमात्रतोऽपि ये ब्रह्मराक्षसपिशाचगणाच्च भूताः ।
ते मारिकाश्च सभयं ह्युपयान्ति स त्वं श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥७॥
त्वं भक्तमानससमीप्सितपूर्तिशक्तो दीनस्य दुर्मदसपत्रभयार्तिभाजः ।
इष्टं ममापि परिपूरय पूर्णकाम श्रीरामदूत हनुमन् हर संकटं मे ॥८॥

॥ इति श्रीशतानन्दमुनिविरचितं श्रीहनुमानत्स्त्रोम् ॥

श्री हनुमानजी मारुति भगवान श्री स्वामिनरायण के पिता हरिप्रसाद विप्र धर्मदेव के कुलदेवता है । शास्त्रो में लोगो के अपने कुल देवता का महत्व बताया गया है । उसे श्रीहरि भी स्वीकार किये है । क्योकि भगवान का भक्त अपने ईष्टदेव की भक्ति निष्काम भाव से करता है । उसे कभी किसी प्रकार का कष्ट हो जाने पर वह कहाँ जाये किसकी शरण स्वीकारे भक्त के लिये बड़ा प्रश्न खडा हो जाता है भगवान की पूजा से भक्ति सकाम हो जाती है । और अन्य की प्रार्थना करने पर पतिव्रता भक्ति में कमी आती है । इस अवस्था में अपने कुलदेव को जो सदैव कुल का रक्षण करके कुल को भगवत मार्ग पर ले जाते है । उनके शरण में जाना योग्य माना जाता है । इस बात को शिक्षापत्री में स्वामिनारायण भगवानने श्लोक नं. ८५ में स्पष्ट रुप में आज्ञा किये है । इस समय हनुमानजी या नरनारायण कवच का पाठ करे । और अन्य देव देवियो की मंत्र-तंत्र का सहारा भगवान के भक्त न ले । इस प्रकार जब धर्मदेव को आसुरी लोक से असह्य कष्ट मिलने लगा । तब श्रीमद् सत्संगिजीवन के प्रकरण १ के अध्याय १७ में शतानंद मुनि वर्णन करते है । तब धर्मदेव ने अपने कुलदेवता की प्रार्थना किये । जिस कारण से हनुमानजी समस्त कष्टो का निवारण कर दिये । इसी प्रकार जो भी इस पाठ को पढेगा उसके सभी कष्ट नष्ट हो जायेगे । ये श्लोक शतानंद मुनिने संस्कृत में लिखे है । उसका हिंदी में शब्द का अर्थ समझकर आत्मसात करे ।

नीतिप्रविण निगमागमशास्त्रबुद्धे
राजाधिराजरघुनायकमन्त्रिवर्य ।
सिन्दूरचर्चितकलेवर नैष्ठिकेन्द्र श्रीरामदूत
हनुमन् हर संकटं मे ॥१॥

भगवान के भक्तो की और स्वयं भगवान की सेवा कैसे किया जो । उसकी रक्षा कैसे करे । उन्हे अच्छी तरह से जानने वाला अर्थात् राजा का मंत्री जो साम, दाम, दण्ड भेद की राजनीति में प्रवीण है । शास्त्रो में वेद-वेदांग में श्रेष्ठ बुद्धि वाला है । अयोध्या के महाराजाधिराज प्रभु रामचंद्र के प्रिय

भक्त और मंत्रीवर भी है। जिसे अपने शरीर पर सिंदूर का लेप अच्छा लगता है आजीवन ब्रह्मचारी का जीवन जीने वाले है। वे व्रती में सर्वश्रेष्ठ है। ऐसे हे प्रभुराम के दूत हनुमानजी हमारे कष्टो को दूर करे।(१)

सीतानिमित्तजरघूत्तमभूरिकष्टेप्रोत्सारणैककसहाय हतास्त्रपौध।
निर्दग्धायातुपतिहाटकराजधाने श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥२॥

परमब्रह्म परमात्मा भगवान श्री पुरुषोत्तम श्रीराम रुप में मानव शरीर धारण करके मानव लीला का अनुसरण कर रहे थे। तब रावण राक्षस सीता माताश्री का अपहरण कर गया। तब रामजी दुखी हुए। उनके दुःख को दूर करने में सहायक बडे-बडे राक्षसो का वधकरके राक्षस राज रावण की स्वर्णनगरी लंका को भस्म करने वाले है प्रभु राम के दूत हनुमानजी हमारे सभी दुःखो को दूर करें।(२)

दुर्वार्यरावणविसर्जितशक्तिघातकष्ठासुलक्ष्मणसुखाहृतजीवव ल्ले।
द्रोणाचलानयननन्दितरामपक्ष श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥३॥

राम-रावण के महायुद्ध में जब भी प्रभु राम की सेना में संकट आया। विशेषकर राम और लक्ष्मण के उपर प्रहार हो उनकी रक्षा करने के लिये सब कुछ न्योझावर कर देने वाले हनुमानजी लक्ष्मणजी के उपर दिव्य शक्ति के प्रयोग का मारक औष्धनिमृत संजीवनी हिमालय से लाकर श्रीराम की सेनामें आनंद ला दिये। ऐसे हे प्रभु राम के दूत हनुमानजी हमारे सभी कष्टो को दूर करें।(३)

रामागमोक्तितरितारितबन्ध्वयोग
दुःखाब्धिमग्रभरतार्पितपारिबर्हं।
रामांघ्रिपद्ममधुपीभवदन्तरात्मन् श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥४॥

मानव शरीर धारी प्रभुराम को पिता के बचन को पूर्ण करने के लिये जाना पडा। १४ वर्ष तक भरत जैसे प्रेमी भाई का वियोग सहना पडा। उनको भी शुभ समाचार सुनाकर भरत से उत्तम पुरस्कार प्राप्त किये। जिसके कारण आप का चित्त हमेंशा अपने ईष्ट प्रभु के चरणो में सदा भ्रमर की तरह सुगंधमें आसक्त होते है। जो दास के भाव से आसक्त रहते है। ऐसे प्रभु राम के दूत हनुमानजी हमारे सभी कष्टो को दूर करें।(४)

वातात्मकेसरिमहाकपिराट तदीयभार्याञ्जनीपुरुतपः फलपुत्रभाव।
ताक्ष्योपमोचितवपुर्बलतीव्रवेग श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥५॥

महाबलवान केसरीराज वायुकी पत्नी श्री अंजनी माता के कठोर तप के प्रभाव से उनके पुत्र के रुप में बलवान वायुपुत्र नाम धारण करके जन्मे। वल-बेग में गरुणजी को पीछे कर दे ऐसे हे प्रभुराम के दूत हनुमानजी हमारे सभी कष्टो को दूर करें।(५)

नानाभिचारिकविसृष्टसीवरकृत्याविद्रावणरुणसमीक्षणदुः प्रधर्ष्य।
रोगघ्रछसत्सुतदवित्तदमन्त्रजाप श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥६॥

आसुरी प्रवृत्तिवाले मंत्र कामण-टुमण करने वाले के मारण अच्चाटनादि मंत्रो द्वारा भेजे गये कृत्यो को क्रोधकरके लाल आँख की दृष्टि से भगा देने वाले। असुर और पापी जिसके आँख के सामने नही देख सकता। ऐसे तेज दृष्टि वाले और जिसके मंत्रो का जाप करने से प्रभु के भक्तो के सभी रोग समाप्त हो जाते है। पुत्रहीन को पुत्र प्राप्त हो जाता है। द्रव्य होने वाले को द्रव्य मिल जाता है। ऐसे प्रभुराम के दूत हनुमानजी हमारे सभी कष्टो को दूर करें।(६)

यन्नामधेयपदकश्रुतिमात्रतोऽपि ये
ब्रह्मराक्षसपिशाचगणाच्च भूताः।
ते मारिकाश्च सभयं ह्युपयान्ति स त्वं श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥७॥

हे मारुति आप का नाम सुनकर ब्रह्म राक्षस पिशाच, भूत, प्रेत, यक्ष इत्यादि लोग भाग जाते है। ऐसे हे प्रभु राम के दूत हनुमानजी हमारे सभी कष्टो को दूर करें।(७)

त्वं भक्तमानससमीप्सितपूर्तिशक्तो दीनस्य
दुर्मदसपत्रभयार्तिभाजः।
इष्टं ममापि परिपूरय पूर्णकाम श्रीरामदूत हनुमन् हर संकंटं मे ॥८॥

प्रभु श्रीराम की कृपा से जो भक्त आपका स्मरण करता है। उसके मन में रहे हुए सभी प्रकार के मनोरथ पूर्ण काम है। तो हमारी भी कामनाये पूर्ण करे। ऐसा मेरा विचार है। हे प्रभुराम के दूत हनुमानजी आप हमारे सभी कष्टो को दूर करे।(८)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

आजोल मंदिर में विदुर नीति का त्रिदिवसीय पारायण और शाकोत्सव अवसर : शास्त्रो में तन, मन और धन तीन प्रकार की सेवा का उल्लेख मिलता है। इन तीनो से भी अधिक समय का बलिदान ये बडी से बडी सेवा है। जो कोई मानने के लिये तैयार नही है। घर पर सोफा के उपर बैठना और दुकान, मकान बंधकरके नीचे बैठना अगल बात है। दोनो में अंतर तो है ? एक तप भी है उल्लेखनीय भी है। आप का यह गाँव समाज मे बडे से बड़ा गाँव है। वाडी अच्छा बनाया है। भव्य शाकोत्सव की जगह भव्य वाडी में शाकोत्सव लिखा होता तो अच्छा रहता। आप सभी का योगदान है। माताजी का साथ है। हम दर्शन करके आ गया हूँ। महाराज ने सात्विक देव-देवी को प्रतिपादित किया है।

एक बात बताये। भोजन सभी को मिलता है। आप यहाँ जो बैठे है। उस से ६ गुना लोग पीछे भोजन करते है। मैं देखकर आया हूँ। आप शायद रास्ता देखते होगे। मेरा सभी से एक अनुरोधहै जो कुछ करें उसे प्रेम से करे किये और करना पडा दोनो में अन्तर होता है। दर्शन करने जाना पडता है। माला फेरना पडता है। यहीं कार्य ईष्टदेव के प्रति सहज भाव से भक्तिभाव से करे तो महाराज खुश होते है। दूसरा कुछ न भी मिले तो महाराज ने सुखी रखा है। उद्यम करने से अन्न तो सभी को प्राप्त होता है। लेकिन याद यह रखना है कि भोजन करने के बाद अन्न पचाता कौन है। नीदं आती है। कई बार माया जाल अधिक होने पर नींद भी नही आती है। लेकिन नींद आने के बाद जगाता कौन है ? मनुष्य तो सब कुछ भूल जाता है। किसी दिन चाभी भूल जाता है। कभी कागज, पाकिट, मोबाईल चार्जर आदि भूल जाता है। एक हरिभक्तो अपने घर वालो को भी भूल गया था। मजाक नही कर रहा हूँ। मंदिर में भूल गये थे। इसलिये कोई बात नहीं है। भाई घर पहुँच गया। टेलीफोन आया अभी तक तुम नही आये ? लेकिन आप तो हमें मंदिर में लाये थे। घर पर कहाँ लाये। कभी शर्ट की बटन उपर-नीचे बंद हो जाती है। बाद में याद आता है कि हम भूल गये। मनुष्य की बुद्धि मर्यादा सीमित होने के कारण भूल जाता है। हम कहते है कि हम इतने बजे उठे है। लेकिन किसी ने जगाया तभी उठ पाये थे। श्वास लेना भूल जाये तो प्रातः सोये ही रह जायेगे। तो अग्निसंस्कार के लिये सभी लोग आ जायेगे। अपने बुजुर्गो ने पेट पर पट्टी बाँधकर श्रम किये है। इससे भोजन दो बार की जगह चार बार मिल रहा है। पचाने के लिये गोलियाँ भी खाना पड रहा है। लेकिन अन्न पचाने वाले और साँस देने वाले भगावन है। कुछ याद रहे कि न रहे लेकिन जब घर पर भोजन करने बैठे तो पहले ग्रास पर प्रभु को याद करे कि यह अन्न किसके कारणसे मिलता है ? हमेशा भले ही याद न रहे भोजन समय याद करे तो उसमें माला, प्रदक्षिणा और पूजा आदि आजाता है। पारायण का कार्य भी यही है। कि भगवान का स्मरण सदैव रहे। हमारा और आप अस्तित्व भगवान के कारण है। यदि देव नही मिले होते तो हम लोग किसी कोने में पडे रहते ? जो कुछ मिला है वह भगवानने दिया है।

हम यहाँ से जायेगे। आप सभी भोजन के लिये प्रस्थान करेगे। प्रसाद स्वरुप समझ कर मर्यादित रुप में खायेगे। अति उपवास भी हिंसा उसी प्रकार अधिक खाना भी हिंसा ही है। शरीर ईश्वर प्राप्ति का साधन है। शरीर को सम्भालना अपना काम है। स्वस्थ रहे तो तनाव कम रहता है।

मधुमेह और कोलेस्टाल वंश परम्परा से मिले । उससे अधिक हम खाकर कर लेते है । पाचने वाले की क्षमता न हो । लड्डू अधिक खाये । घर जाकर आधी गोली औऱ खा लेगे । ऐसा न करें ।

आप के जो भी ईष्टदेव हो या कुछ देवी हो । महाराज सात्विक देवी को मान्य किये है । सात्विक देवी शक्ति के स्वरुप में है । बहने जो कर सकती है । वह हम नही कर सकते है । संस्कार सर्व प्रथम माँ के गोद से पहले गर्भ में से आता है । बाद में संसार की हवा लगने पर आदमी बिगडता है । लेकिन बिगडना नही चाहिए । सब कुछ मिल जाने पर बदमाशी आती है । इससे पतन होता है । समय से पूर्व सावधान हो जाये वह मानव सुखी हो जाता है । यह सनातन सत्य है । नये वर्ष का पहला कार्यक्रम है । इसलिये सभी लोग प्रेम से मिले । नये वर्ष में काजु बादाम, चवाणा, मिठाई और रस पीना नही होता है । किसी के मन में गाँठ हो तो उसे पूरा दूर कर देना चाहिए । जो छोड़ दे वह अच्छा व्यक्ति है । बडी गाडी वाला बडा व्यक्ति नही होता है । समाज हो या परिवार त्याग करने वाला महान होता है । मन की गाँठ खोलने का पर्व होता है । यहाँ पर बैठे सभी लोग भगवान के भक्त हो । बड़प्पन रखना सबसे बड़ी बात है । गुणवान बुद्धि रखकर रहना इसमें ही सुख है । उसे नींद भी आती है । अपने अर्न्तगत कितने मंदिर शांति से प्रबन्धित है । आप कभी हमें आप लोग तनाव में देखे है । देव को आगे रखकर कोई समस्या नही आती है । ये संस्कार, ये घरोहर हमें पीढियो से प्राप्त हुई है । इसलिये देव को आगे रखें यहीं मंत्र है ।

गांधीनगर (से-२३) मंदिर वचनामृत ज्ञान वर्षा महोत्सव अवसर ता. १४-१२-२०१९ (संपादन : गांधीनगर मंदिर) : आप सब भक्तो से मिलकर आनंदित हुआ । मैं अपने घर में ही आया हूँ । स्वामीजी मिलने आये तब हमने कहा था । स्वामीजी आप का आना आवश्यक नही था । एक बार लिखजाने के बाद जो करना है होता है । निमंत्रण न होने पर भी हम आते है । दर्शन किया ठाकुरजी का सिंहासन अच्छा है । अच्छा अर्थात् क्या ? अतिरिक्त प्रसाधन किया हो ऐसी बात नही है । लेकिन भगवान के साथ इतना कुछ रखा रहता है जिससे ढँक जाते है । आज तक तो तरह - तरह के फैशन आये है । कई लोग भगवान को चश्मा पहनाते है । शास्त्र में कही पढे है कि भगवान को कही चश्मा लगा है । बेताला भी नही थे । हाँ नित्यानंद स्वामी को चश्मा था । वह चश्मा आज भी है । भगवान के सिंहासन में भगवान ही पर्याप्त नहीं ? भगवान के साथ दूसरे को रखना पडता है ।

हम व्यास पीठ की आरती उतारते है । आदत सी बन गयी है । वचनामृत अर्थात् महाराजजी के बचन है । मेरी वाणी ही मेरा स्वरुप है । ये महाराज के शब्द है । आज इस स्वरुप का पूजन होता है । यह व्यास पीठे है । इसका गौरव है । शास्त्री स्वामीने काफी कथा पढ़े है । कई पुस्तके लिखे है । हम स्वामी से बोले । एक ऐसी पुस्तक लिखे जिसमें आप के स्मरण हो, और आज तक कहे न हो । यह इतिहास और धरोहर का मूल्य है । यह इतिहास हर जगह नही मिलता है । हम स्वामी के साथ समय बिताये है । काफी बाते हुई हो उमें से कुछ याद हो । बाकी बड़े बापजी के पास से ज्ञात हुआ है । ३-४ पीढी का पुराना इतिहास सभी लिखित नहीं होती है । धरोहर को बचाना है । धरोहर अर्थात् ऐसा इतिहास जो लिखा नही गया हो । लेकिन परम्पार में हो । यह जानना जो अपनी पूँजी है । बडे से लेकर बच्चो तक जो सेतु बनता है । कई ससंस्मरण लोगो को ज्ञात नही है । परिवार का इतिहास भी बच्चो पर थोपा नही जाता है । हम छोटे थे तो ऐसे थे । तो लोग कहेगे आप की किस्मत ही ऐसी है । शेष आप की भाग्य । हमारे ऐसा नही लिखा है । लेकिन इस ईतिहास में से जो बात निकलती है । वह भावी पीढी रक्षण करती है । १०, १२, १५ र्ष में भी बच्चे-बच्चियाँ बात करेगे । हम लोग भाग्य शाली है । अपना इतिहास अपने पास है । जब कि लोगो के पास दंतकथाये है । अपने पास दंत कथा नही है । इतिहास अधिक समझने की बात नही है । हम उसे कितना प्रगट कर सकते है । यह बात है ।

बात वचनामृत की है । वचनामृत उत्सव है । हमारा शास्त्र ज्ञान से परिपूर्ण है । जिसकी सीमा नही है । शास्त्रीजीने आप लोगो को सरलता से पुस्तको में लिख दिया है । मुक्तानंद स्वामी का एक वाक्य लो तो ब्रह्मा से कीटक तक देखे है । गलत सुख का परिमार्जन किये । अनुभव से जो मिलता है उसे जानना कहते है । मानना उधार है । छाया में जो आता है । उसे आप मानते है । आज १४ तारीख होगी । तो हम मान लेते है । कोई कहे आज पंद्रह तारीख है तो भी मान लेते है । हमे बोलना होता है उसकी तैयारी करके नही आता हूँ । मानव पढा अधिक पढलिया भगवान मिले इस लिये काफी कुछ मिला ? सब कुछ मिला ।

मुक्तानंद स्वामी बड़े में बडे संत थे । धुरंधर संत थे ।

और रामानंद स्वामी के शिष्य थे । जो एक समय महाराज के ऐश्वर्य की समाधिप्रकरण को स्वीकार करने के लिये तैयार नही थे । बहुत गहन भाषा में नही लेकिन २०१९ की अपनी भाषा सफलता से समझ में आये । स्वामी माने के लिये तैयार नही थे । आजकल के बच्चे को गद्दी पर बैठा दिये । हम संसार धुम कर बैठे है । अब बात समझ में आई । बाद में यही मुक्तानंद स्वामी बाद में लिखे । मन तम संग मोह..... महाराज की आरती करते समय कहे । काल कर्म से छूटकर परिवार सहित कल्याण हो जायेगा । मुक्तानंद स्वामी कहे कि मुक्ति सुगम कर दिये । लोग संसार में गलत-उल्टी बाते बताते रहते है । बाद में क्या करे पता नहीं चलता है । नक्षत्र वार और त्यौहार बार-बार उपवास, ये तो अच्छा है कि सात दिन ही है । भूख लोग को तोड दे । श्वास लेने दे ये अच्छी बात है । संसार में जो मिला है अच्छा है । उसका कोई मूल्य नहीं है । शेष संसार में कितने लोग भटकते है । कितने लोग सिर फोड लेते है । लेकिन हमें कही जाना नही पडता है । ना गंगा, गोदावरी, काशी, घर बैठे मिल गये । अक्षरवासी भ्रम हम पैदा कते है । तथा सरलता से भ्रम पाल लेते है ।

कई बार हम दूर-दूर यात्रा पर जाते है । वैकेशन होने पर भ्रमण करने जाते है । मुझे पता है । क्योकि कोन हमारे पास आता है । ठहरने और भोजन की व्यवस्था की अनुसार कर दीजियेगा । स्वामीजी आप पर ऐसा फोन तो आता ही होगा ये आप सीधे बोले कि हम घुमने गये है कृपया ठहरने की व्यवस्था कर दे । अपने शास्त्र में बताया गया है कि यात्रा स्वयं के खर्च से जाना चाहिए । लेकिन यह मैच नही करता है । होता है क्या ? हमें तो सारी सुविधा चाहिए । कमरा ठीक नही है । डबल बेड चाहिए । तकिया, चदूदर सब अच्छा चाहिए । हमें अच्छा मिलना चाहिए । ऐसा करना है तो होटल क्या कम है ।

अठसठ तीर्थ चरणे.... अपने मंदिर में भगवान है । महाराज कहते है हम इसमें प्रत्यक्ष रहते है । यह हमारे शब्द तो नही है । महाराज के शब्द है । ये शब्द लौकिक नही है । महाराज का वचन है इन मूर्तियो को धातु-पथ्थर ही मत मानिये । इन मूर्तियो में प्रत्यक्ष रहकर । सभी के छोटे-बड़े संकल्प को पूर्ण करते है । आश्रित को अन्नधन, वस्त्र और इज्जत की रक्षा महारजा करते है । इससे अधिक क्या चाहिए ? इस तरह की सुरक्षा माँ-पिता भी अपने बच्चो की भी नही लेते है । यह वास्तविक है । यदि हम महाराज के बनकर रहेगे तो अन्न, वस्त्र, धन और सम्मान महाराज ने दिया है ।

स्वामी का अभिनंदन करता हूँ कि उन्होने सरलता सिखाये है । दंभ और नाटक दुनिया में चलता है । यहाँ पर यह आप को नही दिखाई देगा । चेला बनाने पर खर्च उठाना पडता है । मानव अपने परिवार का पालन कर सके वही है । शेष भार लेकर कहाँ धुमे ? लेकिन जो ज्ञानी होते है । भगवान की कृपा वाले लोग सरल होते है । शक्तिशाली होने पर शक्ति का प्रदर्शन न करने वाले विरल लोग होते है ।

वैसा किसी अच्छे व्यक्ति की पहचान होने पर लोग सीना उपर करके चलते है । आप देखे मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी बडे नंद संत कितने समर्थवान थे । फिर भी महाराज के सामने सामर्थ छिपा कर रखते थे । अपने शक्ति को महाराज की कृपा मानते थे । महाराज उन्हे कर्ता-धर्ता कहते थे । इससे उनके सामर्थ का पता चल जाता है ।

आपका बच्चा भी मंदिर के प्रागण में आये ऐसा वातावरण अवश्य दे । घर में अच्छी पुस्तक हो अच्छी बात है । लेकिन बगल में मोबाईल रखा रहता है । तकनीक का प्रयोग विवेक और बुद्धि से करना चाहिए । ऐसा महाराजने कहा है । सदुपयोग और दुरुपयोग अपने हाथ में है । तकनीक का होना अच्छी बात है । हमारे चारो तरफ डबले पडे है । उसका दास नही बनना है । कई लोग रिंग बजने पर आधा सावुन हाथ में लेकर बाहर निकलते है । गुंड मोर्निग और गुड इवनिंग होता है । सुख से जीने दे तो अच्छा ! पूरे दिन वोटसएप पर बने रहते है । जय स्वामिनारायण...... यो लोग भेजते है । उसे हम रोक लगा देते है । दूसरा तो फिर क्या चालू रखे । यह न करे सही बात है । हमारी इच्छा पर हम फोन उठाते है । फोन हमें नही लाया है । बार-बार फोन बजता है । आप बजाते रहते है । दूसरा क्या ? संसार में यही चल रहा है ? हम अपना काम करे । सबसे अच्छा है ।

इस समय में आप सभी ने हमें समय दिया । आप सभी को धन्यवाद । हमारे विशेष आग्रह है कि आप अपने परिवार को भी समय दे । आप शरीर सुरक्षित रखते है । आग्रह करना आवश्यक नही है । केवल महाराज आप को स्वस्थ रखे । और हम लोग मिलते रहे । हँसते और बोलते रहें । आनंद से रहें इतना कह कर सभी को प्रेम भरा आशीर्वाद प्रदान किये ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

अपना सम्प्रदाय साहित्य के क्षेत्र में अधिक समृद्ध है । श्रीजी समकालीन नंद संतोने गद्य एवम् पद्य में असंख्य रचनाये किये थे । तथा सम्प्रदाय को भेट में दे दिये । श्रीजी महाराज के दर्शन मात्र से नंद संत शीध्र से रचना कर देते थे । ये सभी साहित्य हम लोगो के भाग्य से आज भी सुरक्षित है।

श्रीजी महाराजाने अहमदाबाद, जेतलपुर, असलाली, गढडा, लोया, पंचाला, सारंगपुर, कारीयाणी, वडताल, जगहो पर संतो-हरिभक्तो के साथ सभा में प्रस्नोतरी किये थे । वह अक्षरशः वचनामृत रुप में सुरक्षित है . श्रीजी महाराज के सानिध्य में स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी, स.गु. गोपालानंद स्वामी, स.गु. मुक्तानंद स्वामी, स.गु. नित्यानंद स्वामी, स.गु. शुकानंद स्वामी पाँच संतोने संकलित किये थे । हमे २७३ वचनामृत भेट में दिये है । वर्तमान में (हाल नं. २ में उनके डायरो में है । वचनामृतका २०० वर्ष पूरा होने पर कालुपुर मंदिर द्विशताब्दी महोत्सव २३ से २६ फरवरी के उल्लास पूर्वक मनाने वाले है ।

ऐसे सत्संग के अमूल्य सत्संग हस्त प्रति श्री स्वामिनारायण म्युजियम में सुरक्षित है । इस हस्त प्रति को लिखते समय उपयोग में लिया गया । कित्ता तथा हाथी के दाँत से बना आकियु भी म्युजियम हाल नं. २ में दर्शन हेतु रखा गया है ।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची -जनवरी-२०२०

दि. १०-०१-२०२० श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) दरबारगढ मोरबी, ह. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-जनवरी-२०२०

दि. ०३-०१-२०२०	डॉ. निमाबेन अजयभाई पटेल - साइंस सीटी।
दि. ०५-०१-२०२०	रमेशभाई कांतिभाई - वडुवाला - साइंस सीटी।
दि. ०५-०१-२०२०	(दोपहर) मौलिक आर. भावसार - मेहसाना ह. डॉ. नरेन्द्रभाई डी. भावसार।
दि. १६-०१-२०२०	जैनिक विनितकुमार महेता - शिकागो।
दि. १६-०१-२०२०	(११ बजे) अ.नि. दक्षाबेन सुरेशभाई मेहता - विहारवाला - हिम्मतनगर - ह. हार्दिकभाई तथा मार्मिकभाई।
दि. २०-०१-२०२०	जशुबेन रमणभाई - कुंडालवाला

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जनवरी-२०२०

रु।. २५,०००/-	प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री।
रु।. १०,०००/-	हर्ष रोनकभाई ठक्कर - ह. डॉ. वसंतभाई वालु - अहमदाबाद।
रु।. ५,५००/-	प.भ. मीनाबा मधुभा गोहिल - भरुच।
रु।. ५,२५०/-	प्रेमचंदभाई पाटडीया - सायलावाला - यु.एस.एस.
रु।. ५,१००/-	सोनी जयेन्द्रकुमार चुनीलाल - जन्म दिन पर - पलिडयवाला - राणीप।
रु।. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल - अहमदाबाद।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

धन्य है घेलाभाई को

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

मित्रो ! आज की जो बात है वह गुजरात के प्रत्येक साहित्य जगत में सन उन्हत्तर के समय की नोंधलिये है । उस समय की बात है । वि.सं. १८६९ का भयंकर अकाल था । उस समय भीषण भूख की आग में हजारो-लाखो मानव काल के भोजन बन गये । यह अवस्था यदि मानवों की थी तो आप कल्पना करे पशु-पक्षी की दसा विचलित कर देती थी । वह एक दुखद काल था । उस समय आज के समयानुसार साधन सामग्री की कभी थी । दूर दूर से अनाज आता था । अन्न के लिये लोग परेशान थे । मृतक व्यक्ति को जलाने की सुविधा नही थी । पशुओ की बात क्या करे ? मानव एवम पशु के अस्थि पिंजर गाँव के किनारे होने के कारण असहनीय अवस्था हो गई थी ।

आज हम जिसकी बात करे रहे है । लोया गाँव के कोली हरिभक्त घेलाभाई और उनकी पत्नि इस दुःखद घटना में आ चुके थे । इस विषम अवस्था में प्रभु के आधार को पकडकर अवस्था का सामना कर रहे थे । तीन-तीन उपवास करने के बाद ये लोग सोचे कि भगवान को याद करके प्रयास करना चाहिए । सफल या असफल हो उसमें ईश्वर की मर्जी है । इस विषम परिस्थिति में तल गुजरात में जाकर श्रम करके जीवन व्यतीत करेगे । खराब समय समाप्त हो जायेगा ।

ईष्टदेव की प्रार्थना करके घर बंद करके परमात्मा के नाम का स्मरण करके लोया से तल गुजरात की तरफ चल दिये । पति आगे पीछे पत्नी चल रही थी । रास्ते में भिक्षाटन या श्रम करके जीवन निर्वाह करते हुए अग्रसर हो रहे थे । एक दिन रास्ते पर सोने का हार देखे । भगत सोचते है यह किसी का हार गिर गया है । हमारे ईष्टदेव का आदेश है कि पराये धन को स्पर्श नहीं करना चाहिए । मुझे उसको प्राप्त करने का मन नही था । लेकिन इस अवस्था में पत्नी को नजर में आयेगा तो वह उठा लेगी । इस कारण से हार को धूल से ढक दिये । और आगे चलने लगे । पत्नी यह देखी तो तीव्रता से चलकर पास आई और पूछी की पतिदेव आप क्या कर रहे हैं ? घेलाभाईने सब बात बता दिये । तब उनक पत्नी बोली हम लोग स्वामिनारायण के भक्त है । आप को हार दिखा फिर भी हमारी नजर में पराया धन धूल है । धन्य है ऐसे भक्त !!

अभी तो केवल मात्र पन्द्रह से बीस कदम आगे बढे ही थे । कि एक घुडसवार को आते देखे । वह नजदीक आकर घेलाभाई से हार के विषय में पूछ-परछ करने लगा । घेला भगतने कहा हमने हार देखा है । वहाँ पर धुल में पडी है । आप उसे उठा ले । घुडसवार वहाँ जाकर हार उठा लिया । भगत के पास आकर हार बताने का पुरस्कार देने लगा । और आश्चर्य से पूछा इस विषम काल में वह भी २१ तोले सोने का हार था । आप का मन ललचाया नहीं ! आप कौन है ? घेलाभाई अपना परिचय बताते हुए कहे – हम कोली है । मेरा ग्राम लोया है । अभी गुजरात की तरफ मजदूरी करने जा रहे है । हम स्वामिनारायण के भक्त है । इस लिये हार को लिये नही । मुझे पुरस्कार भी नही चाहिए । हमे परिश्रम की रोटी मीठी लगती है । यह पुरस्कार लेना होता हो पूरा हार छिपा नही देते ।

घुडसवार को यह बात सुनकर आश्चर्य हुआ । इस अकाल तथा निर्जन रास्ते पर पडे हार पर लालच न करने वाला आत्मा का बलवान होगा । इस भक्त के भगवान कितने महान होगे । जिसके सानिध्य से यह गरीब उच्च संस्कार प्राप्त किया है । वह मन ही मन स्वामिनारायण भगवान को प्रणाम किया । भक्त का इतना अच्छा व्यवहार देखकर घुडसवार का अर्न्तमन स्वच्छ हो गया । शुद्ध होने

पर स्वामिनारायण भगवान की भक्तिक ा उसमें अंकुर फुटा ! हे प्रभु धन्य है आप तो वास्तव में चरित्र निर्माता है। आपके द्वारा किस-किस चरित्र के लोग उत्तम चरित्र वाले बन गये। आपने इन सभी के हृदयो में सतचरित्र की ज्योती जला दी। ऐसे ज्योर्तिधर ! हे परम दयालु स्वामिनारायण भगवान ! आप मुझे अपना आश्रित बनाये।

घेलाभाई भगवान की कृपा से परिश्रम द्वारा सरलता से जीवन व्यतीत किये। अपने साथ ही साथ एक और व्यक्ति के जीवन में स्वामिनारायण भगवान के प्रति भक्ति और सत्संग का दीपक जला दिये।

बाल मित्रो ! इस बात को पढकर हम भी लगातार एक बात की खोजमें लगे रहे कि अपना चरित्र ऐसा बनाये कि हमारे ईष्टदेव तथा अपने संतो के प्रति और मुमुक्षुओ के प्रति सदभावना बनी रहे। एसे परमदयालु ईष्टदेव का भजन करके सुखी बने। इससे सरलता से ब्रह्मांड पार करने का पुण्य प्राप्त होगा।

●

गुरु के बिना ज्ञान नही

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

ज्ञान की प्राप्ति की जिज्ञासा के लिये उम्र का कोई सम्बन्धनहीं है। अपना शास्त्र पच्चीस वर्ष तक ज्ञान प्राप्त करने को बताया है। यही श्रेष्ठ समय होता है। कई बार यह यह अलग हो जाता है।

एक नगर में प्रभुदास नाम के एक मुमुक्षुजीव रहते थे। युवावस्था में लगभग ३५ वर्ष में ज्ञान प्राप्ति करने की ईच्छा मन में जागृत हुई। उनका साथ देने के लिये वैराग्य ने भी तैयारी कर लिये।

एक दिन प्रभुदास को विचार आया कि यह क्या ? इसी तरह उम्र पूरी कर देना ? संसारी व्यवहार का चक्र का अंत नही है। क्या इसी का नाम जीवन है। मानव जन्म का यही फलश्रुति है। मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। इसका उपयोग करके परमात्मा का साक्षातकार कर लू तो धन्य हो जाऊंगा। इसी विचार के साथ प्रभुदास घर छोड़कर जंगल की तरफ चल दिये। उसे समय अच्छे गुरु की खोजमें जीवात्मा को जंगल में जाना पडता था। सच्चे गुरु की प्राप्ति हेतु प्रभुदास वन, जंगल, नदी-नाले पार कर रहे थे। भूख-प्यास धूप ये सब मात्र प्रभुदास खेल समझते थे। क्योकि वे भगवान के प्रति पूर्ण सर्मपित हो गये। तथा सच्चे ज्ञान के लिये गुरु की खोज में थे।

जिसे गुरु प्राप्त करना हो। ज्ञान प्राप्त करना हो। उसे कमजोर नही होना चाहिए। क्योकि हरि के मार्ग पर शूरवीर ही चल सकता है। इस तरह चलते घुमते कुछ दिन के बाद एक नदी का किनारा दिखाई दिया। नदी के किनारे किसी संत-महात्मा का आश्रम देखते ही प्रभुदास के अर्न्तमन को विश्वास हुआ कि यह स्थान मुझे प्रभु प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

प्रभुदास जब आश्रम में प्रवेश किये तो कोई दिखाई नही दिया था। जिससे वह आश्चर्य में आ गये। तभी भयंकर दुर्गंधवहाँ से आने लगी। दुर्गंधके मार्ग पर आगे जाने पर एक वृक्ष के नीचे एक महात्माजी बैठे थे। उनकी पूरी शरीर सड गई थी। उससे मवाद निकलता रहा था। इतनी दुर्गंधकी वहाँ कोई खडा भी न रहे सके। प्रभुदास हिम्मत करके पास जाकर प्रणाम किये। वह क्यो आये है अपनी बात संत के पास रखे। ज्ञानोपदेश देने के लिये कहे।

महात्माजी बोले इस हालत में मैं तुम्हे कैसे ज्ञान दे सकता हूँ। इसके बाद भी यदि आप की ईच्छा है तो सर्व प्रथम मेरी सेवा करो बाद में ज्ञान प्रदान करेगे। सच्चे लगन वाला प्रभुदास गुरु के पास रहकर सेवा करने लगा। उसे ऐसा लगा कि महात्माजी मेरा रास्ता ही देख रहे थे। गुरुजी सेवा का आदेश देने लगे।

महात्माजी बोले कि यह जो मुझे भयंकर रोग हुआ है। उसका मुख्य कारण इस नदी का जल है। जो मेरे अनुकुल नही है। ३ कि.मी. दूर नदी है आप को वहाँ से जल लाना पडेगा। प्रभुदासने ईधर-उधर नजर फेरा कोई पात्र दिखाई नही दे रहा था। वह गाँव में भिक्षाटन करके अन्न अर्जित किये। अन्न को लेकर प्रजापति के घर गये। अन्न के

बदले में घडा खरीद कर लाये । महात्मा द्वारा बताये नदी पर जाकर उसमें जल भर आश्रम में गुरु के चरणो के पास रख दिये । घड़ा रखते ही गुरु गुस्से में आ गये । लाल आँख करके लात से मार कर घडा फोड दिये । बिना साफ किये नये घडे में जल लाये हो । इतना भी ज्ञान नही है । ज्ञान लेने निकल पडे हो । बहुत कुछ सुनाने के बाद बोले । दूसरे घड़े में पुनः जल जाकर लाओ ।

प्रभुदास पुन, गाँव में गये । भिक्षा माँगे । प्राप्त अन्न से दूसरा घडा खरीद कर ले आये । इस बार घडे को अच्छे प्रकार से साफ करके जल भर कर पुनः गुरु के चरणो के पास रख दिये । रखते ही गुरु गुस्से से आग बबूले हो गये । डाँट की वर्षा शुरु कर दिये । तुम मेरे पूर्व जन्म का शत्रु था। इतनी दूर से पानी लाया लेकिन ढककर नही लाया । इस पानी के उपयोग से कुछ भी हो सकता है । ऐसा कह कर इन घडे को भी फोड दिये । पुनः जल लाने का आदेश दिये ।

प्रभुदास तीसरी बार गाँव में भिक्षाटन के लिये गये । इस बाद भिक्षा मिलने में तकलीफ आई । किसी तरह भिक्षा माँगकर फिर से घडा खरीदे । ठक्कन भी खरीदे पुनः नदी पर गये । उसके मन का विचार बदला । ऐसे क्रोधी गुरु के पास रहकर कैसे ज्ञान मिलेगा । इससे अच्छा यहाँ से वापस चले । दूसरे गुरु से ज्ञान प्राप्त करेगे । यह सोचकर प्रभुदास घडे को नदी के पास रखकर आगे बढ़ने लगे । तभी घडे में से आवाज आती है ।

कोदारेण विदारिता वसुमती पश्चाद खरा रोहणम्,
यस्थ्यपिष्ट कुलालपादहननं दंडेचे चक्रंभ्रमम् ।
रजवा छेद उत्ताडनय दहनं अंतसिद्धसोढं मया,
ग्राम्य स्त्री करटंकणं बहुकृतं तन्नोऽपि दुखं महत् ॥

यह आवाज सुनकर पहले तो प्रभुदास ईधर-उधर नजर दौडाने लगे । यह आवाज कहाँ से आ रही है । कोई दिखाई भी नही दे रहा है । उसे ज्ञान हुआ । यह घडा ही बोल रहा है । कितना सुंदर घडे ने उपदेश दिया । इस एक श्लोक से अपने दुख का वर्णन घडे ने कर दिया ।

पहले मैं मिट्टी के रुप में मै था । वहाँ पर कोई प्रजापति आकर कुदाली से हमारे उपर प्रहार करके पृथ्वी से अलग कर दिया । फिर गधे पर लाद दिया । कितना खराब पाप किये होगे कि हमें गधे पर बैठना पडा । बाद में धोके मारे गये । लात मारा गया । मेरी शरीर को गूथ डाला । बाद में मुझे चक्र पर रखा गया । और इतना घुमाया गया कि मुझे चक्कर आ गया । बाद में ठोका गया । धूप में सुखाया गया । इतने में संतोष नही हुआ । अग्नि भी भष्ठी में डाल कर पकाया (जलाया) गया । इतने कष्ट सहकर मैं बना हूँ । फिर भी लोगो को संतोष नही होता है । बहने खरीदने से पहले अंगुली से टकोरति जाता हूँ । वहने पास करे या फेल करे । लेकिन आज मुझे संतोष होने वाला था । कि मैं एक महात्मा के काम आऊँगा । आप मुझे गुरु के आश्रम तक मुझे छोकर भले ही चले जाओ ।

आप को हमारे जितना कष्ट तो नही सहना पडा है । तुम किस लिये सिद्ध महात्मा का त्याग कर रहा है । परीक्षा के बिना कोई मूल्य नही होता है । धडा के द्वारा उपदेश सुनकर प्रभुदास पुनः हिम्मत किये । घडा साफ करके, ठक्कन धोकर उपर रखकर आश्रम की तरफ चल दिये । ज्यो आश्रम में प्रवेश किये । आश्चर्य ! जो महात्मा रोग से ग्रसित थे । एक दम सामने आ गये । शरीर पर रोग का कोई नामो-निशान नही था । वह प्रभुदास को आश्रम में ले आये । महात्माजी बोले वत्स तुम्हारी परीक्षा हेतु मैने यह योग प्रभाव सर्जित किया था ।

तुम्हारे में वह योग्यता थी । लेकिन धैर्य की कमी के कारण घडा के द्वारा धैर्य का ज्ञान कराया । आप उपदेश पाचने की क्षमता मिल गयी है । मैं तुम्हे ज्ञान देने के लिये तैयार हूँ।

प्रभुदास तो खुश खुशखुशाल होकर प्रभु के चरणो पर गिर गया । गुरु की शरणागति स्वीकार कर लिये मित्रो ! अभी तो कितना सरल है । हमें इतनी परीक्षा नही देना पडता है । हम लोगो के लिये अपने ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवानने धर्मवंशी गुरु बना रखे है । भगवान की कृपा से प्राप्त गुरु और सत्संग का लाभ लेकर जीवन धन्य बनाये ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) ऐकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "ज्ञान भक्ति की आधार शिला है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग कईबार सुनते है और पढे भी है कि 'ज्ञान' से अच्छी 'भक्ति' श्रेष्ठ है । अपने महाराजने भक्ति की व्याख्या की है। श्रीकृष्ण भगवानने भी अर्जुन को गीता का ज्ञान दिये थे। जिस में भक्ति की बात की गयी है। तो भक्ति में ज्ञान का क्या महत्व है। ज्ञान भक्ति की आधारशिला है। ज्ञान के आधारशीला रुपी जलि से भक्ति रुपी वृक्ष का सिंचन किया जाता है । पानी देने पर ज्ञान रुपी जल से भक्ति रुपी वृक्ष बड़ा होता है। जब किसी वस्तु या मनुष्य का महत्व समझ में आता है तभी लगाव पैदा होता है। जैसा ज्ञान वैसी भावना बनती है । जितना अधिक ज्ञान उतना महत्व अधिक होगा। उदाहरण स्वरुप रास्ते में चलते समय दुकान में अंगुली दिखी और आप खरीद लिये तो मन में खराब होने का भाव अवश्य आयेगा ? यह बनावटी है या सही पता नही । हमें लगेगा खराब है । अच्छी चीज कम मिलती है ? खराब का महत्व समझ में नही आयेगा। अपने पास रख देते है । कुछ दिन के बाद किसी दुकानदार को दिखाया तो पता चला ५०००/- रुपये की अंगूठी है। इस कारण से इसका मोह और महत्व बढ गया था। इस प्रकार भगवान की सर्वोपरी महानता का ज्ञान बढता जाता है। भगवान के प्रति प्रेम बढता जाता है। प्रेम होने पर विश्वास बढता है । सच्चे ज्ञान से प्रेम और विश्वास दृढ बनता है। लेकिन परिस्थिति से विश्वास डिग जाता है।

अज्ञानता के कारण एसा होता है । संसार के प्रति विषय वासना, लोभ, आसक्ति यह अधिक होता है । तब विश्वास डिग जाता है। जिस कारण से मंदिर भी नहीं जाते है। पहले प्रतिदिन मंगला आरती में आते थे। कभी ऐसा हो गया कि उनके सगे वाले कथा में बैठे थे। वह धाम में चल बसे। जो कि एकदम स्वस्थ और निरोगी थे। भगवान की सेवा में ये फिर भी धाम में चले गये। ऐसा हो जाता है। लेकिन हम प्रतिदिन भगवान से माँगते है। अंत समय तक भगवान को याद रहता है । लेकिन अपना विश्वास डिग जाता है। सच्चे ज्ञान से विश्वास हटता नही है। यह भक्ति भी उच्च कोटि की होगी। उच्च मध्य, निम्न स्तर का ज्ञान होता है। उच्च किस्म के ज्ञानी को भक्त के कुसंग का प्रभाव नही पडता है। सच्चे ज्ञान के अभाव में श्रद्धा द्वितीय किस्म है। सच्चा ज्ञान न होने पर कई लोग कई बार श्री नरनारायणदेव का खंडन करते है। सच्चा ज्ञान न होने पर दो मिनट में विश्वास डिग जाता है। सिद्धान्तो शास्त्रो शास्त्र थोडे समय के लिये भूल जाते है । निम्न प्रकार का ज्ञान प्रारम्भिक अवस्था में होता है । वह व्यक्ति कुछ दिन मंदिर आकर रुक जाता है। शास्त्र में से पढा गया ज्ञान शब्द ज्ञान है । उसमें से कोईबार मानसिक रोग भी हो जाता है । मानस्कि रोग अर्थात् ज्ञानाभिमान का रोग, उदाहरण स्त्रुप सत्संगी जीवन, वचनामृत, शिक्षापत्री, भक्त चिंतामणि अधिक पढे है। इस लिये सब आ गया है। अधिक ज्ञान हो गया है। काम, क्रोध, मद, लोभ सब खराब है। सब समझ में आ गया । इससे अंदर का कसाई जाता नही है। बल्कि की अभिमान आ जाता है। यही अभिमान ईश्वर प्राप्ति में बाँधा ननता है। यह ज्ञान बाह्य ज्ञान है। तो आंतरिक ज्ञान क्या है ? जैसे पुस्तक में दीपक से दीपक नही जालाया जा सकता है। उसके लिये साक्षात् अग्नि चाहिए। उसी प्रकार शास्त्र के द्वारा पढे गये। शब्द ज्ञान से अपना ज्ञान प्रगट नही

होता है। उसे जानकारी कहते है। अपना आंतरिक ज्ञान प्रगट करने के लिये प्रत्यक्ष ''ज्ञानी'' के पास से शास्त्र समझना पडता है। समझकर जीवन में लाना पडता है। वही सच्चा ज्ञान है। जो अपने में बदलाव उसे सच्चा ज्ञान कहते है। उस माध्यम से परमात्मा की प्राप्ति होती है। यही आंतरिक ज्ञान प्रभु के तरफ ले जाता है।

जिस प्रकार हम किसी व्यंजन के बनाने की विधिको पढ और समझ लेते है। बाद में प्रयोग के रुप में रसोई में जाते है। प्रयोग रुप में तैयार करते है। मात्र पढ लेने से सुनने से नही हो सकता है। कथा में सुनकर काम, क्रोध, मद, लोभ सब खराब लगता है। अर्थात् ज्ञान मिल गया ? उसे मात्र जानकारी कहते है। जब इसी आंतरिक रुप से ग्रहण करे तो आंतरिक ज्ञान हुआ। आंतरिक ज्ञान दृढ श्रद्धा और विश्वास से युक्त होता है। इस लिये हम भक्ति करे। भगवान की प्राप्ति के लिये आंतरिक ज्ञान आवश्यक है।

•

ज्ञान का भंडार वचनामृत

– ठक्कर वीणाबेन नरेन्द्रभाई (बोपल)

अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने इस पृथ्वी पर देह धारण करके मुमुक्षु जीवात्मा के उद्धार के लिये ''सर्व जीव हितावह'' मोक्ष मार्ग को अखंड रखने के लिये धर्मवंशी आचार्यो को बनाये। महाभागवती दीक्षा के प्रवर्तक नव महामंदिरो का निर्माण किये। सत्शास्त्रो की रचना किये। तथा परमहंसो से भी रचना कराये।

लगभग पाँच हजार वर्ष पहले महाभारत के युद्द मैदान में श्रीमद् भागवत गीता स्वरुप वाणी श्रीकृष्ण भगवान के मुख से सुनने को मिली। जब कि आज से लगभग २०० वर्ष पूर्व श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वगुण से ''ज्ञान का भंडार वचनामृत'' रुपी वाणी अवतरित हुई।

वचनामृत की कुल संख्या २७३ है। संवत १८७६ को माघसर सुद चौथ यह वचनामृत जयंती का दिन है। वचनामृत इस रुप में है। ग.प्र.प्र. ७८ सारंगपुर १८, कारियाणी १२, लोया १८, पंचाला ७, ग.म. ६७, वडताल २०, अहमदाबाद ८, असलाली १, जेतलपुर ५, ग.अं.प्र. ३९ = २७३।

वचनामृत प्रश्नोत्तर, संवाद, जिज्ञासा, भक्ति और धर्म का पूरा रसायन है। मुमुक्षुओ के लिये मार्गदर्शक कडी है। हरिभक्तो के लिये ज्ञान का भंडार है। संसारियो के लिये जीवन रुपी शक्ति है।

जिस प्रकार से सत्संगिजीवन धर्मशास्त्र कहा जाता है। सत्संगिभूषण भक्ति शास्त्र कहा जाता है। उसी प्रकार महाराज की परावाणी अर्थात् वचनामृत से 'योग शास्त्र' कहते है। योग अर्थात् –

"योगः चित्त वृत्ति निरोधः"

मनुष्य के मन को भगवान से जोडे ऐसे शास्त्र कहा जाता है।

अपने ''वचनरुपी अमृत उपदेशो'' पाँच परमहंस संतो स.गु. ब्रह्मानंद स्ावमी, स.गु. गोपालानंद स्वामी, स.गु. मुक्तानंद स्वामी, स.गु. नित्यानंद स्वामी और शुकमुनि के पास से संग्रह करवाये थे।

इस लिये जिज्ञासु वचनामृत के विषयवार बिन्दु का अवलोकन करके महाराज किस विषय पर विशेष आग्रह करते है। महाराज किस में खुश है ? किस में नाराज है। वह वचनामृत में स्पष्ट वर्णित है।

महाराजने स्वंय पुरुषोत्तम नेक अवसर पर कहे है। यह वचनामृत रुपीवाणी श्रीपूर्ण पुरुषोततम की है। यह प्रमाणित होता है।

महाराज की प्रार्थना करना कि हे महाराज ! कृपा करके घोर कलियुग में ऐसा दिव्य ज्ञान देने वाले अक्षरधाम के अधिपति धर्म, भक्तिनंदन हमारे हृदय में अखंड निवास करे।

योऽक्षरे परतरे विराजते स्वीयधाम्नि निज
मुक्त सेवितः ।
एष भक्तिवृषनंदन समे श्रीहरिर्वसतु मानसे
सदा ॥

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आर्शीवाद से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से १२-०१-२०२० के दिन प्रातः ६-४० बजे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्यमें दिव्य एवम् भव्य शाकोत्सव पूर्ण हुआ । पवित्र धर्नुमास में श्रीहरिनाम स्मरण धुन पूर्ण होने के बाद ॠगार आरती का दर्शन करके २५०० जितने हरिभक्तोने बेंगन को अलौकिक सब्जी बाजरे की रोटी, मठ्ठा, गुड, मक्खन हारी मिर्च का अलौकिक प्रसाद लेकर धन्य हुए । सम्पूर्ण अवसर पर कोठारी जे.के. स्वामी, जे.पी. स्वामी, नटु स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी कोठार स्टाफ के हरिभक्तोने प्रेरणादायक सेवा प्रदान किये थे । (कोठारी शास्त्री नारायणमुनिदासजी)

हिरावडी के आँगन में ६ ठ्ठा शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् आर्शीवाद से उसी प्रकार प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में हिरावाडी कमल फ्लैट के मेदान में श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल तथा समस्त सत्संग समाज हिरावाडी द्वारा ता. ११-०१-२०२० को शनिवार ७ बजे भव्य शाकोत्सव मनाया गया ।

इस अवसर पर महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), शा. स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी महंत श्री एप्रोच, शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) आदि संत श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित ऐसा । शाकोत्सव, समैया की महिमा समझाये थे । अनेक हरिभक्तोने छोटी-बड़ी सेवा किये थे । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने शाक वधारकर सभी को आशीर्वाद दिये थे । तथा सभा का संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर)ने किया था । (कोठारीश्री हिरावाडी)

कुबडथल गाँव में भव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से कुबडथल गाँव में ता. २१-१२-१९ के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस अवसर पर धामो-धाम से आये संत जेतलपुर, कालुपुरधाम से संत आये थे । इन लोगो ने कथा-वार्ता करके श्रीहरि के महिमा को समझाये थे । शाकोत्सव के यजमान प.भ. मुकेशबाई रावजीभाई और प.भ. धर्मेन्द्रभाई सवजीभाई आदि परिवार ने निजमंदिर, ठाकुरजी का सिंहासन सुशोभित करके भव्य आयोजन किया गया । गाँव के सभी हरिभक्त शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए ।

(शा.के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुरधाम)

मांडल गाँव में अलौकिक शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मांडल गाँव में ता. २८-१२-१९ को अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया था ।

इस अवसर पर जेतलपुर, महेसाणा, अंजली आदि धामो से संत आये थे । तथा तीर्थो से सांख्ययोगी बहने आकर कथा-वार्ता का लाभ लिये थे । महिला मंडल ने रोटी की सुंदर व्यवस्था की थी । हरिभक्तोने सुंदर प्रबन्धकरके सबको खुश कर दिये । (शा.के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुरधाम)

ट्रेन्ट गाँव में अलौकिक शाकोत्सव

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवीन असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर ट्रेन्ट (ता. मांडल० में २९-१२-२०१९ के दिन गाँव के सभी हरिभक्तो और जेतलपुर धाम के संत मिलकर शाकोत्सव मनाये थे । जिसके यजमान प.भ. प्रभुभाई त्रिभुवनभाई और अ.सौ. भगवतीबेन प्रभुभाई पटेल परिवारने लाभ लिया ।

इस अवसर पर सत्संग सभा में जेतलपुर, अहमदाबाद, अंजली, माणशा, कानपुर, मेहसाणा और गढपुर के संत आकर कथा वार्ता रुपी भाव का लाभ लिये ।

(शा.के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुरधाम)

मनीपुर गाँव में अद्‌भूत शाकोत्सव

ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्रीहरि प्रसादीभूत मनीपुर गाँव में ता. २९-१२-१९ के दिन संत-हरिभक्तोने शाकोत्सव का आयोजन किये थे।

सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन एक घंटे तक की गई। बाद में जेतलपुर मंदिर के संत द्वारा कथा, वार्ता भजन गाये गये थे। स.गु. ब्र. स्वामी पूर्णानंदजीने शाक का वधार किया था। सबको अलौकिक दर्शन भी कराये। महिला मंडल ने रोटी की सेवा प्रदान किये थे। शाकोत्सव के यजमान प.भ. महेन्द्रभाई नर्मदाशंकर जोशी परिवार था। हजारो हरिभक्त सत्संग सभा और शाकोत्सव का प्रसाद लेकर लोग धन्य हुआ। (शा.के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुरधाम)

डेडियासण गाँव में अलौकिक शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की सुंदर प्रेरणा से विरमगाम तालुका के डेडियासण गाँव में ता. ४-१-२० के दिन अलौकिक शाकोत्सव मनाया गाय था। इस अवसर पर जेतलपुरधाम से संत और ब्र.स्वा. शा. पूर्णानंदजीने शाक वधारा था। सभा में ब्र. सगु. शा.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (ट्रस्टीश्री), स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदासजी (मकनसर) आदि संतोने कथा वार्ता किये थे। सांख्ययोगी बहने भी आई थी। बहनो के द्वारा बाजरा की रोटी बनाई गयी थी। सभीने शाकोत्सव का लाभ लिया।

(शा.के.पी. स्वामी महंतश्री जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) धनुर्मास धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) के सभी हरिभक्त के साथ मिलकर पवित्र धनुर्मास में ता. १६-१२-१९ से ता. १४-१-२० तक पूरे मास २०० जितने भाईयो बहनो और बच्चो ने प्रातः श्री स्वामिनारायण मंहामंत्र की धुन किये थे। अन्तिम दिन को शाकोत्सव करके धुन की पूर्णाहुति की गई थी।

(कोठारीश्री डांगरवा वांटो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर में ता. २८-११-१९ से ता. ३०-११-१९ वचनामृत द्विशताब्दी के अवसर पर वचनामृत कथा अ.नि. संतोकबेन परसोत्तमदास पटेल, अ.नि. आयुषीबेन दीपककुमार पटेल की तरफ से शा. प्रेमप्रकाशदासजी के वक्ता पद से की गई थी। जिस में जनमंगलपाठ और १०८ तुलसी पत्र का पूजन किया गया था।

ता. ०२-१२-१९ के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में हिम्मतनगर मंदिर में विराजमान सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव उपरोक्त पारायण के यजमान तरफ से उल्लास पूर्वक मनाया गया थआ। तीर्थो के संतो ने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारी नूतन मंदिर का अवलोकन करके प्रसन्न हुए। पूरा उत्सव यहाँ के महंत स्वामी और हरिभक्तोने किया था। ता. २९-१२-१९ के दिन अ.नि. संतोकबेन पटेल और अ.नि. आयुषीबेन पटेल परिवार की तरफ से भव्य शाकोत्सव मनाया गया था। संतने श्रीहरिभक्तो की महिमा बताये थे। सभी हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए।

(कोठारीश्री हिम्मतनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया (आर.सी. टेक्नीकल रोड) में दिव्य शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा गांधीगनर से-२ मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर आर.सी. टेकनिकल रोड अहमदाबाद में ता. १२-१-२०२० के दिन भव्य शाकोत्सव मनाया गया। जिसमें स्थानिक हरिभक्त यजमान बनकर यहाँ के छोटे-बड़े हरिभक्तोने तन, मन और धन से सेवा प्रदान किये थे।

संतो द्वारा कथा वार्ता की गई थी। पूरे धनुर्मास में सभी हरिभक्त प्रातः महामंत्र धून किये थे। हमारे इस मंदिर में प्रति रविवार को शायं ४-३० से ६-३० तक सत्संग सभा की जाती है। जिसके चारो तरफ निवास करने वाले हरिभक्तो एवम् धर्मप्रेमियो से आग्रह है कि सत्संग का लाभ अवश्य ले। सत्संग सभा के बाद भोजन प्रसाद खिलाया जाता है। प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से धार्मिक और सामाजिक प्रवृत्तियाँ भी की जाती है।

अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्य बनने की क्रिया चालू है । जिसको सदस्य बनना हो वह कोठारीश्री का सम्पर्क करे । (कोठारी रमेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी अखिलेशदासजी (मथुरा) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा नालंदा-२ का ४ पाटोत्सव विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इस अवसर पर कोठारी शा.स्वा. सर्वेश्वरदासजी (मथुरा), शा.स्वा. सुखनंदनदासजी, शा. डी.के. स्वामी, और हरिप्रकाश स्वामी आदि संत द्वारा कथा-वार्ता, भजन-कीर्तन और ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की गई । प.भ. वसंतभाई पटेल परिवार यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये थे ।

घनश्याम महिला मंडल अन्नकूट बनाकर सेवा प्रदान किये थे । सभी हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए । (के.वी. प्रजापति)

इन्द्रपुर गाँव में श्रीमद् भागवत पंचदिवसीय पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की प्रेरणा से इन्द्रपुरा श्री स्वामिनारायण महिला मंडल तथा समस्त ग्रामवासियो के सुंदर आयोजन से ता. ३-१-२० से ७-१-२० तक इन्द्रपुरा गाँव में श्रीमद् भागवत पंचदिवसीय पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर से पूर्ण हुई थी । हजारो ग्रामवासी कथा श्रवण करके धन्य हुए । गाँव के छोटे-बडे हरिभक्त तन, मन और धन से सेवा करके श्रीहरि को खुश किये । ता. ५-१-२० के दिन समस्त बहनो के गुरु अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप प.पू. गादीवालाश्री पधारे थे। सभी बहनो को आशीर्वाद दिये । ता. ७-१-२० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम अपने मदिर के ठाकुरजी की आरती उतारी गई । सभा की पूर्ति पर आरती की गई थी । सभी को आशीर्वाद प्रदान किये । कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी आदि संत पधारे थे । सभा का संचालन शा.स्वा. ब्रजभूषणदासजीने किया था ।

(कोठारीश्री इन्द्रपुरा)

प्रतापपुरा (कलोल) गाँव में भव्य शाकोत्सव

सर्वोपरी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन से प्रतापपुरा गाँव में भव्य शाकोत्सव का आयोजन पूर्ण हुआ । जिसके यजमान प.भ. विनोदभाई चौधरी (गांधीनगर) परिवार थे । इस अवसर पर गांधीनगर मंदिर के महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने शाकोत्सव को वधार किया । सभा में कथा वार्ता भी किये । महिला मंडलने और युवक मंडल ने सुंदर सेवा प्रदान की । (सोमाभाई चौधरी)

रामनगर (साबरमती) में अलौकिक शाकोत्सव

परमकृपालु सर्वोपरी श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा गांधीनगर मंदिर से-२ के महंत शा. स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से रामनगर साबरमती मंदिर में पूरे धनुर्मास में प्रातः महामंत्र की धुन की गई थी । पूरे सत्संग समाज द्वारा कोटेश्वर गुरुकुल में ता. ५-१-२० के दिन अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर शा. व्रजभूषण स्वामी (डी.सी. अमेरिका) और शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) ने कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिये । (नटुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर गांधीनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से ता. १२-१-२० के दिन पोर गांव के समस्त सत्संग द्वारा सुंदर शाकोत्सव मनाया गया था । इस अवसर पर स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी, शा. व्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर) आदि संतोने कथा का लाभ दिये । पूरे शाकोत्सव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल में प्रेरणादायक सेवा दिये थे । सभी हरिभक्त देव दर्शन, कथा श्रवण करके धन्य हुए । (राकेशभाई पटेल)

चांदखेडा (अहमदाबाद शहर)

परमकृपालु परमात्मा ईष्टदेव श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से चांदखेडा सत्संग समाज द्वारा ता. १२-१-२० को सुदंर शाकोत्सव किये थे । इस अवसर पर नारणघाट से शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी औरकोटेश्वर गुरुकुल के संत भगवान श्री स्वामिनारायण के लीला चरित्र कथा को सुनाये । ठाकुरजी के सामने शाकोत्सव करके सभी भक्तो को प्रसाद दिये ।

(धवल पटेल)

माणेकपुर मंदिर (चौधरीका) द्वारा शाकोत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

के आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) तथा माणेकपुर मंदिर के कोठारी चौधरी शम्भूभाई जोईताभाई की प्रेरणा से अ.नि. चौधरी शांताबेन गांडाभाई जोईताभाई परिवार की तरफ से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर चौधरी सत्संग समाज के द्वारा प्रतिदिन सुंदर आयोजन किया गया था। ता. १३-१-२०२० को वालियानगर माणेकपुर मे भव्य शाकोत्सव मनाया गया था ।

स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने सभा में शाकोत्सव लीला महिमा की कथा सुनाये माणेकपुर मंदिर निर्माता अ.नि. स.गु. पुराणी स्वामी करशनदासजी स्वामी यहाँ के सत्संग को नवपल्लवित करके सभी को सत्संगी बनाये थे । ऐसे इस गांव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा ठाकुरजी के सामने अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया । सभी हरिभक्तोने प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये । तीर्थो से आये संत पधारे थे । सभी भक्तोने देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन और संतो की प्रेरक वाणी सुनकर प्रसाद लेकर धन्य हुए ।

(कोठारीश्री माणेकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अम्बापुर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से अंबापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पीछे प्लोट में ता. १२-१-२० को रविवार इस गाँव के सत्संगी युवक समस्त सत्संग अंबापुर ने शाकोत्सव मनाया था । श्रीहरि के समय की शाकोत्सव की झाँकी जैसा लोगो को लगा था । गांधीनगर से-२ और कोटेश्वर के संत द्वारा कथा वार्ता की गयी थी । सभा का संचालन शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने शोभा बढाया था । सभी हरिभक्त देव दर्शन, कथा श्रवण करके शाकोत्सव का लाभ उठाये थे । (कोठारीश्री अंबापुर)

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय का अन्नकूट उत्सवधाम आदरज (मोटी) आठवाँ पाटोत्सव एवम् वचनामृत पंचान्ह पारायण

परमकृपालु परमात्मा श्री सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गाँधीनगर से-२) की प्रेरणा मार्गदर्शन से यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. कृष्णदासजी तथा कोठारीश्री आदरज समस्त सत्संगी समाज के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर का आँठवा वार्षिक पाटोत्सव एवम् वचनामृत पंचान्ह पारायण ता. २४-१-२० से २८-१-२० तक अपने विद्वान संत ने श्रीहरि के वचनामृत की परावाणी का पान कराये । इस अवसर पर बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर बहनो को दर्शन दिये थे । ता. २८-१-२० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । निज मंदिर में ठाकुरजी की आरती किये थे शाकोत्सव का अलौकिक वघार किये थे । सभी को आशीर्वाद दिये थे । गाँव के लोगो ने तन, मन और धन से सेवा किये थे । सभा का संचालन शा. गोपालजीवन स्वामी (मोयद)ने किया था । (कोठारीश्री आदरज मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण का ३० वाँ (भाईयोका) और बहनो का २९ पाटोत्सव एवम् कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) की प्रेरणा-मार्गदर्शन से मोखासण श्री स्वामिनारायण मंदिर भाईयो का ३० वाँ और बहनो का २९ वाँ पाटोत्सव तथा उसके उपलक्ष्य में श्री पुरुषोत्तमप्रकाश त्रिदिनात्मक कथा ता. ७-२-२० से ७-२-२० तक स.ग. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्ता पद पर से हुई । पाटोत्सव के यजमान अ.सौ. पटेल रुखीबेन घनश्यामभाई तथा प.भ. घनश्यामभाई मणीलाल पटेल तथा उनके चि. मुकेशभाई और संजयभाई आदि परिवारने लाभ उठाया था . ता. ७-२-२० के दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारे थे । बहनो को आशीर्वाद दी । प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा ठाकुरजी का अन्नकूट आरती कथा पारायण की पूर्णाहुति आरती के साथ पूर्ण हुई थी । सभा का संचालन स.गु. शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी ने किया था । (शा. ब्रजभूषणदासजी कोटेश्वर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका सत्संग सेवा स्मृति महोत्सव

धोलका मंदिर में बिराजमान परमकृपालु श्री मुरलीमनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा धोलका मंदिर के महंत स.गु. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से अ.नि. स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी अक्षरवास के लिये श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका में सत्संग सेवा स्मृति महोत्व के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत पारायण ३०-१२-१९ से ५-१-२० तक स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (कांकरीया) के वक्ता पद से हुई ।

ता. ५-१-२० को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । सर्व प्रथम ठाकुरजी का दर्शन करके अ.नि. स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी के संकल्प से वर्तमान महंत स्वा. सत्यसंकल्पदासजी के सुंदर प्रयास से नूतन श्री मुरली मनोहरदेव यात्रिक भूवन का प.पू. महाराजश्री के कर कमलो द्वारा उद्घाटन हुआ था । बाद में शाकोत्सव प.पू. महाराजश्री के कर कमलो से पूर्ण हुआ । इस पूरे अवसर पर तीर्थो से आये संत-हरिभक्त पधार कर अलौकिक लाभ उठाये थे ।

(कोठारी स्वा. रामप्रकाशदासजी - धोलका)

श्रीहरि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मारुसणा

भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मारुसणा गाँव के हरिभक्तो के सुंदर सहयोग से अ.नि. स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की दिव्य प्रेरणा से उनके शिष्य महंत सत्यसंकल्पदासजी के मार्गदर्शन से मारुसणा गाँव के नूतन हरिमंदरि का निर्माण पूर्ण हुआ । ता. १२-१-२० से १६-१-२० तक श्रीहरि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव विधिवत रुप से पूर्ण किया गया । इस अवसर पर प.भ. बाबुभाई जमनादास पटेल आये थे । स.गु. शा. स्वा. हरिप्रियदासजी (गाँधीनगर) स.गु. शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (कांकरिया), शा.स्वा. सरजुदासजी (द्वारका) तथा स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) आदि से आये थे । कथामृत का रसपान कराये थे । संहिता पाठ का संतोने भी श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ का पाठ किये थे । ता. १६-१-२० को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कर कमलो द्वारा नूतन मंदिर में सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त रुप से की गई । यज्ञ की आरती से पूर्णाहुति की गई थी । समस्त बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री मंदिर में आरती करके बहनो को आशीर्वाद प्रदान की थी । प.पू. आचार्यश्री सभी को आशीर्वाद दिये । अ.नि. पटेल पालीबेन शंभुभाई परिवार द्वारा धर्मकुल का पूजन आरती की गई थी । पूरा उत्सव उल्लास से मनाया गया था ।

(कोठारी भरतभाई सी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भायला श्रीमद् भागवत कथा

सर्वावतारी ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से सगु. महानुभावानंद स्वामी के कृपापात्र गाँव भायला के आँगन में ता. ७-१-२० से १३-१-२० तक स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) और स.गु. शा.स्वा. नंदकिशोरदासजी की प्रेरणा से स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से और प.भ. नटुभा धेमरभा परिवार यजमान पद पर श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण पूर्ण किये । गाँव के सभी हरिभक्त कथा श्रवण करके आनंदित हुए । ता. १०-१-२०२० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आये थे । गाँव के निज मंदिर में दर्शन करके सभा में यजमान परिवार और सभी भक्तो को आशीर्वाद दिये । धोलका मंदिर के महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी और संत मंडलने सुंदर मार्गदर्शन किये थे । धामो से संत लोग आये थे । (कोठारीश्री भायला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतपुरा (लाकरोडा) शाकोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा स.गु. पू. महंत शास्त्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतपुरा (लाकरोडा) ता. ८-१-२०२० के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । यह व्यवस्था हरिभक्तोने किया था । इस अवसर पर स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर), स.गु. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (कालुपुर), स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट) और शा. स्वामी गोपालजीवनदासजी (मोयद) आदि संतोने कथा-वार्ता करके ठाकुरजी के सामने शाकोत्सव किये थे । मंदिर बनने के बाद पहला शाकोत्सव था । गाँव के हरिभक्त तन, मन और धन से सेवा किये थे । संतो की अमृतवाणी और शाकोत्सव का प्रसाद लेकर धन्य हुए । ऐसा शाकोत्सव प्रति वर्ष मनाये ऐसी इच्छा लोग प्रगट किये थे ।

(सुरेश चौधरी - हिंमतपुरा)

समग्र अहमदाबाद देश की बाल मंडल शिबिर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से उसी प्रकार प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा मार्गदर्शन और अध्यक्षता में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के आयोजन से ता. १९-१-२०२० रविवार प्रात: ९ बजे सांय ५-३० बजे तक श्री नरनारायणदेव नगर (पारसनगर-घाटलोडीया) के विशाल ग्राउन्ड में एक दिन की भव्य १० से २० वर्ष के बीच के बच्चो-बच्चियो का शिबिर का आयोजन किया गया था ।

प्रातः ९ बजे श्रीहरि के मंगलमय नामो का जयघोष के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा दीप प्रगट किया गया था । प्रातः के सत्र में शा.स्वा. भक्तिनंददासजी (मूली) श्री पार्षभाई उपाध्याय (माउन्ट एवरेस्ट आरोहक) तथा श्री तेजसभाई (आर.एस.एस.) द्वारा जीवन में सक्रियता तथा अनुसाशन एकता विषयो पर प्रवचन देकर बालको को प्रोत्साहित किये थे । दोपहर के भोजनोपरांत १ से ३ बजे तक बालिकाओ की सभा में सांख्ययोगी बहने संस्कार प्रेरक प्रवचन द्वारा उसी प्रकार प.पू. श्री राजा तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री का दर्शन और आशीर्वाद द्वारा बालिकाओ को दिव्य सुख मिला ।

दोपहर के बाद वाले सत्र में स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) तथा शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल) द्वारा क्रमानुसार 'आदर्श बालक' और सत्संग का ज्ञान पर सुंदर विवेचन की गयी थी । इस अवसर पर आये महंत स.गु.शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा), स.गु. महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (अंजली मंदिर), स.गु. महंत शा.स्वा. देवस्वरुपदासजी (माणसा), शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी (हिंमतनगर), शा. स्वा. सत्यप्रकाशकाशदासजी (मूली) और स.गु. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी (चराडवा) उसी प्रकार स.गु. स्वा. नित्यप्रकाशदासजी और स्वा. सत्संगसागरदासजी (सुरेन्द्रनगर) आदि युवक ब्रह्मनिष्ठ विद्वान संतोने बच्चो को अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये ।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की निष्ठा प्रेरक शुभ आशीर्वचन देकर सभी बालको के साथ फोटो सेशन दिये थे । सभा का संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) तथा शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (कालुपुर) ने सुंदर रुप से किये थे । कुल ९१ गाँवो से ३००० से अधिक बच्चे सत्संग शिबिर में आये थे . तथा अपने जीवन को धन्य बनाये थे । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जामफलवाडी (रामोल) का ७ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथ समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) की शुभ प्रेरणा से ता. २१-१-२०२० के दिन मंदिर का ७वाँ वार्षिक पाटोत्सव के अन्तर्गत ठाकुरजी का पूजन, अभिषेक और अन्नकूट २ घंटे 'स्वामिनारायण' महामंत्र धुन एक घंटे की प्रासंगिक के साथ मनाया गया । इस अवसर पर स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा.स्वा. ब्रजभूषणदासजी (कोटेश्वर), स.गु. महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट) तथा स.गु. स्वा. धर्मकिशोरदासजी का लाभ दिये । सभा का संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) ने किया था ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से स.गु महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव ता. २६३-१२-१९ से ३०-१२-१९ तक मनाया गया था । इस अवसर पर शहर में शोभायात्रा २०० वचनामृती पोथीयात्रा कुंवारी कन्याओ ने सिर पर कलश रखकर निकली थी । पारायण वक्ता शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी, स्वा. कृपावत्सलदासजी, स्वा. सत्संगसागरदासजी, स्वा,. नित्यप्रकाशदासजी और स्वामी त्यागवल्लभदासजी थे । सुरेन्द्रनगर शहर और आस-पास के १५००० हजार से अधिक हरिभक्त कथा श्रवण करके ता. ३०-१२-१९ के भव्य शाकोत्सव का लाभ उठाये थे । साथ ही साथ यहाँ के वृद्धाश्रम, अंधआश्रम, विधवा आश्रम में प्रसाद जाकर खिलाया गया था । सभा का संचालन देव स्वामी कृष्णवल्लभदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायण युवक मंडल और महिला मंडल सुंदर रुप से पूर्ण किये थे । अन्य सेवा में शांति स्वामी, भक्ति स्वामी और कनु भगत ने भाग लिया था ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राजकोट (हालार प्रदेश) द्वारा भव्य शाकोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के स.गु शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी की प्रेरणा से राजकोट हालार प्रांत श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. २९-१२-१९ रविवार के दिन भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । इस अवसर पर शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजीने शाकोत्सव की महिमा का सुंदर वर्णन किये थे ।

इस अवसर पर मूली, रतनपर, मकनसर, चराडवा, हलवद और लिम्बडी से महंत श्री ज्ञान स्वामी, आदि संतोनमे

भगवान के महिमा का वर्णन किये थे । शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी युवक मंडल की प्रगति का आशीर्वाद दिये थे । शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजीने उत्सव का संचालन किये थे । ६००० हजार भक्तोने शाकोत्सव का लाभ लिये । उस प्रसाद के प्रति कृतज्ञ हुए थे ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल हालार - विभाग - जयेश टांक, घनश्याम वरु)

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनिया (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर वचनामृत २७३ का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के पूजारी स्वामी अजयप्रकाशदासजी तथा सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से अपने कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में वचनामृत द्विशताब्दी पंचदिनात्मक वचनामृत कथा शास्त्री सत्यसंकल्पदासजी के वक्ता पद से सायंपूर्ण हुई । यहाँ के यजमानने तन, मन, धन से सेवा प्रदान किये थे । तथा यजमान का सन्मान किया गया । कथा की आरती धूनक रके प्रसाद लेकर लोग धन्य हुए । (प्रवीण शाह)

ह्युस्टन (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर वचनामृत २७३ का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत शा. सुव्रत स्वामी के मार्गदर्शन में श्री वचनामृत द्विशताब्दी के उपक्रम में हमारे ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरु, शुक्र और शनिवार को प्रतिदिन शायं स्वामी द्वारा कथा के साथ हुई । सेवा देने वाले सभी यजमान का फूलहार से स्वागत किया गया था । वचनामृत ग्रंथ का ५ यजमान ने पूजन-आरती किये थे । अंत में ठाकुरजी की आरती, धून-कीर्तन नित्य-नियम करके सभी ने प्रसाद ग्रहण किया था । (शाह प्रविणलाल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन वडतालधाम में वचनामृत २७३ का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी के मार्गदर्शन में श्री वचनामृत द्विशताब्दी के अर्न्तगत स्वामीने वचनामृत २७३ की कथा की गई । यजमान परिवार द्वारा ग्रन्थ और वक्ताश्री का पूजन किया गया था । हरिभक्त कथा सुनकर धन्य हुए । सभा में सेवा देने वाले तथा यजमान का फूलहार से स्वागत किया गया था । कथा के पश्चात ठाकुरजीकी आरती, थाल, नित्य, नियम करके प्रसाद दिया गया था । (प्रविण शाह)

छपैयाधाम पारसीप श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री वचनामृत २७३ का पूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी की प्रेरणा से न्युजर्सी पारसीप की छपैयाधाम हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री वचनामृत २७३ का द्विशताब्दी जयंती विकेन्ड के मध्य सांय ५ से ८ के बीच वचनामृत कथा कहकर की गई । यजमानने वक्ता श्री एवम् ग्रंथ का पूजन किये थे ।

सभी सेवा देने वाले और मेहमानो का स्वागत पुष्पगुच्छ से किया गया था । ठाकुरजी की आरती करके प्रसाद देकर सबको अनुग्रहीत किया गया । (प्रविणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो धनुर्मास में कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो में धनुर्मास में प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन संत हरिभक्त समूह में किये थे । शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने स.गु. निष्कुलानंद के काव्य में वचन विधिकी कथा कहे थे । पूजारी ब्र. स्वामी कृष्णप्रियानंदजीने ठाकुरजी की प्रतिदिन नये श्रृगांर के साथ दर्शन कराये थे । शा. भक्तिनंदन स्वामी (जेतलपुर) ने कथा का लाभ दिया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा सत्संग शिबिर का सुंदर आयोजन किया गया था । सेवा देने वालो का सन्मान किया गया था । (वसंत त्रिवेदी)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) अहमदाबाद में आयोजित बाल सत्संग शिबिर में अधिक संख्या में बालकोने भाग लिया था । उस अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) नारायणघाट मंदिर में वचनामृत की कथा पारायण और विविध अभिषेक के अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते हुए पू. लालजी महाराजश्री तथा पोथीयात्रा दर्शन । (३) मोटेरा गाँव में वचनामृत रात्रीय पारायण तथा शाकोत्सव (४) कोचरब गाँव में शाकोत्सव (५) पाटण गाँव में भागवत कथा करते वक्ताश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

(१) हमारे सीनेमिन्शन (अमेरिका) मंदिर में शाकोत्सव करते संत-हरिभक्त । (२) शिकागो मंदिर में वसंत पंचमी को शिक्षापत्री जयंती की कथा करते हुए संत । (३) रजाइना (केनेडा) मंदिर में शाकोत्सव करते संत और हरिभक्त । (४) सास्काटोन (केनेडा) मंदिर में शाकोत्सव । (५) ओस्ट्रेलिया में लगी भीषण आग से पीडितो को सहायता अपने आई.एस.एस.ओ. सेवा द्वारा सहायता दी गयी ।

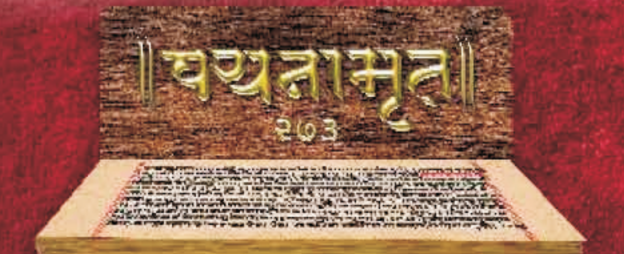

वचनामृत महोत्सव

दि. २३ से २६ फरवरी २०२०

अध्यक्ष

प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

आयोजन स्थल :
श्री नरनारायणनगर
पारसनगर, भूयंगदेव, अहमदाबाद

महोत्सव की रुपरेखा

दि. २३-२-२०२० रविवार
समय : सायं ६-०० से ७-३०
वचनामृत का पूजन - लेसर शो लाईट एवं साउन्ड शो आतीशबाजी
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद

दि. २४-२-२०२० सोमवार
सायं ४-०० से ७-०० स्वागत नृत्य - वचनामृत की व्याखान माला
वचनामृत का पूजन - ब्लड डोनेशन
रात्री ९-०० से ११-०० सांस्कृतिक कार्यक्रम (युवक मंडल द्वारा)

दि. २५-२-२०२० मंगलवार
दोपहर १२-३० से ३-०० वचनामृत का समूह महापूजन
दोपहर ४-०० से ७-०० पांच नंद संतो का पूजन -
वचनामृत की व्याख्यान माला - यजमानश्री का सन्मान
रात्री ९-०० से ११-०० सांस्कृतिक कार्यक्रम (महिला मंडल द्वारा)

दि. २६-२-२०२० बुधवार
सुबह ६-३० से ९-३० महाभिषेक, अन्नकूट, प्रासंगिक सभा
स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद
समय : सायं ४-०० से ७-००
व्याखानमाला, सफाई कर्मचारीयोका सन्मान,
धर्मकुल पूजन, संत पूजन, समूह आरती

वचनामृत समूह महापूजा रु। ५०००/- भरकर
नजदीक के शिखरबध्ध मंदिरमें नाम लीखवाये

Follow Us @ nndkalupurmandir

आयोजक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद